१. इतिहास के साधन

हमने प्राचीन और मध्ययुगीन भारत के इतिहास का अध्ययन किया है । इस वर्ष हम आधुनिक भारत के इतिहास के साधनों का अध्ययन करेंगे । इतिहास के साधनों में भौतिक, लिखित और मौखिक साधनों का समावेश होता है । इसी भाँति; आधुनिक तकनीकी विज्ञान पर आधारित दृश्य, श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य साधनों का भी समावेश होता है ।

भौतिक साधन : इतिहास के भौतिक साधनों में विभिन्न वस्तुओं, वास्तुओं, सिक्कों, प्रतिमाओं और पदकों आदि साधनों का समावेश किया जा सकता है ।

भवन और वास्तु : आधुनिक भारत का ऐतिहासिक कालखंड यूरोप के और विशेष रूप से अंग्रेज सत्ताधीशों और भारतीय रियासतदारों की शासन व्यवस्था का कालखंड माना जाता है । इस कालखंड में विभिन्न भवनों, पुलों, सड़कों, प्याऊ, फौआरों जैसी वास्तुओं का निर्माण किया गया । इन भवनों में प्रशासनिक कार्यालयों, अधिकारियों, नेताओं तथा क्रांतिकारियों, अधिकारियों, नेताओं तथा क्रांतिकारियों के आवासों, रियासतदारों के रजवाड़ों, किलों, कारावासों जैसी इमारतों का समावेश होता है । इन वास्तुओं में अनेक भवन अथवा इमारतें आज अच्छी स्थिति में देखने को मिलती हैं । कुछ वास्तुएँ राष्ट्रीय स्मारक के रूप में घोषित की गई हैं तो कुछ भवनों में संग्रहालय स्थापित किए गए हैं । जैसे; अंडमान की सेल्यूलर जेल ।

यदि हम इन वास्तु स्थानों पर जाते हैं तो हमें तत्कालीन इतिहास, स्थापत्यशास्त्र और वास्तु के स्वरूप के आधार पर तत्कालीन आर्थिक संपन्नता के विषय में जानकारी मिलती है । जैसे- अंडमान की सेल्यूलर जेल में जाने पर स्वातंत्र्यवीर सावरकर के क्रांतिकार्यों के विषय में; मुंबई के मणिभवन अथवा वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में जाने पर गांधी युग के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है ।

क्या तुम जानते हो ?

वस्तु और इतिहास : इतिहास के अध्ययन हेतु वस्तु संग्रहालय द्वारा विभिन्न वस्तुओं, चित्रों, छायाचित्रों जैसी विविध वस्तुएँ संरक्षित रखी जाती हैं । पुणे के आगा खाँ पैलेस में स्थित गांधी स्मारक संग्रहालय में हम महात्मा गांधी द्वारा उपयोग में लाई गईं वस्तुओं, दस्तावेजों को देख सकते हैं ।

आगा खाँ पैलेस, पुणे

और स्मारक : स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात समय में अनगिनत व्यक्तियों के स्मारकों का निर्माण प्रतिमाओं के रूप में किया गया । आधुनिक भारत के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ भी महत्वपूर्ण हैं । विभिन्न प्रतिमाओं के आधार पर हमें तत्कालीन शासकों और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । प्रतिमा के नीचे पाटी पर संबंधित व्यक्ति का पूरा नाम, जन्म-मृत्यु का उल्लेख, उस व्यक्ति के कार्यों का संक्षेप में उल्लेख, जीवनपट के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । महात्मा जोतीराव फुले, लोकमान्य तिलक, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की प्रतिमाओं की तरह विभिन्न घटनाओं की स्मृति में निर्माण किए गए स्मारक भी संबंधित घटनाओं,

घटनाओं का कालखंड, उन घटनाओं से जुड़े व्यक्ति आदि की जानकारी देते हैं । जैसे- विभिन्न स्थानों के शहीद स्मारक

करके देखें-

अपने समीप के परिसर में पाए जाने वाले स्मारकों और प्रतिमाओं की जानकारी प्राप्त करो । उनके आधार पर तुम्हें उस घटना अथवा व्यक्ति के विषय में कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है, उसे लिखो ।

लिखित साधन : आधुनिक भारत के इतिहास के लिखित साधनों में निम्न बातों का समावेश होता है ।

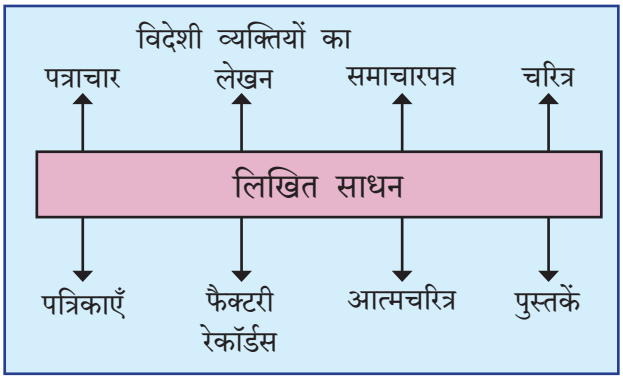

और प काएँ : समाचारपत्रों द्वारा हमें सम-सामयिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है । साथ ही; समाचारपत्रों में किसी घटना का गहन विश्लेषण, विद्वानों की मत-प्रतिक्रियाएँ, संपादकीय लेख प्रकाशित होते रहते हैं । हमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है । स्वतंत्रता पूर्व समय में ज्ञानोदय, ज्ञानप्रकाश, केसरी, दीनबंधु, अमृत बाजार जैसे समाचारपत्र जनजागरण के महत्त्वपूर्ण साधन थे । इन समाचारपत्रों के आधार पर हम अंग्रेज शासन की भारत के विषय में निर्धारित नीतियों और उनके भारत पर हुए परिणामों के विषय में अध्ययन कर सकते हैं । अंग्रेजों के शासनकाल में समाचारपत्र मात्र राजनीतिक जागरण ही नहीं अपितु सामाजिक पुनर्जागरण के साधन के रूप में भी कार्य कर रहे थे । विष्णुशास्त्री चिपलूणकर ने मासिक पत्रिका 'निबंधमाला' में, लोकहितवादी उर्फ गोपाल हरि देशमुख ने साप्ताहिक पत्रिका 'प्रभाकर' में लिखे शतपत्र द्वारा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर भाष्य किया ।

चि ी,

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर और :

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने १९२० ई. के जनवरी महीने में 'मूकनायक' नामक पाक्षिक पत्रिका प्रारंभ की परंतु उन्हें अगला विद्यार्जन करने हेतु इंग्लैंड जाना पड़ा । अतः उन्होंने इस पत्रिका का दायित्व अपने सहयोगी पर सौंपा । डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने अप्रैल १९२७ ई. में 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका प्रारंभ की । सामान्य जनता को जगाने और उन्हें संगठित करने हेतु उन्होंने बहिष्कृत भारत में लिखना प्रारंभ किया । इसके अतिरिक्त 'जनता' और 'प्रबुद्ध भारत' ये अन्य दो समाचारपत्र भी चलाए ।

मानलच और ा : मानचित्र को भी इतिहास का महत्त्वपूर्ण साधन माना जाता है । मानचित्र के आधार पर हम शहरों अथवा किसी स्थान के बदलते स्वरूप का अध्ययन कर सकते हैं । अंग्रेजों के शासनकाल में 'सर्वे ऑफ इंडिया' इस स्वतंत्र विभाग की स्थापना की गई । इस विभाग ने भारत के विभिन्न प्रांतों और शहरों के वैज्ञानिक पद्धति से सर्वेक्षण कर मानचित्र बनाए हैं । मानचित्रों की भाँति वास्तुविशारदों द्वारा बनाए गए प्रारूप भी भवन स्थापत्यशास्त्र के तथा किसी क्षेत्र के विकास

के चरणों का अध्ययन करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं । जैसे- मुंबई पोर्ट ट्रस्ट विभाग के पास मुंबई बंदरगाह के मौलिक प्रारूप हैं । इस बंदरगाह को विकसित करते समय वास्तुविशारद और अभियंताओं द्वारा बनाए गए ढाँचे/प्रारूप भी हैं । इन ढाँचों/प्रारूपों के आधार पर हमें मुंबई महानगर के विकास की जानकारी मिल सकती है ।

मौखिक साधन : आधुनिक भारत के इतिहास के मौखिक साधनों में निम्न साधनों का समावेश होता है ।

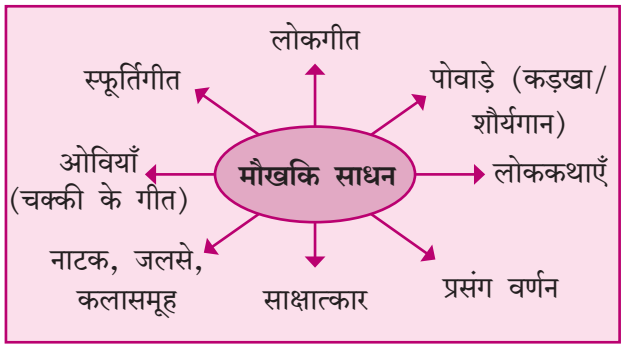

स्फ गी : स्वतंत्रता आंदोलन के समय अनगिनत स्फूर्तिगीत रचे गए । उनमें से कई स्फूर्तिगीत लिखित स्वरूप में उपलब्ध हैं । परंतु अनगिनत अप्रकाशित स्फूर्तिगीत स्वतंत्रता सेनानियों को कंठस्थ हैं । इन स्फूर्तिगीतों द्वारा हमें स्वतंत्रतापूर्व समय की स्थितियों और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्राप्त होने वाली प्रेरणा की जानकारी मिलती है ।

पोवाड़े (कड़ा अथवा शौ गान) : पोवाड़ों के माध्यम से किसी घटना अथवा व्यक्तियों के कार्यों की जानकारी प्राप्त होती है । अंग्रेजों के शासनकाल में १८५७ ई. का स्वतंत्रता युद्ध, विभिन्न क्रांतिकारियों के शौर्य का प्रदर्शन पर आधारित पोवाड़े रचे गए । इन पोवाड़ों का उपयोग लोगों में चेतना और प्रेरणा निर्माण करने के लिए किया गया । स्वतंत्रता युद्ध के समान ही सत्यशोधक समाज द्वारा किया गया शोषित वर्ग का जागरण, संयुक्त महाराष्ट्र का संघर्ष जैसी घटनाओं पर आधारित पोवाड़े रचे गए हैं ।

करके देखें-

भारतीय स्वतंत्रता युद्ध के समय में रचे गए स्फूर्तिगीतों और पोवाड़ों का संग्रह करो और उनको प्रस्तुत करो ।

य, य और य य साधन : वर्तमान समय में तकनीकी विज्ञान के विकास के फलस्वरूप फोटोग्राफी, ध्वनिमुद्रण, फिल्म आदि कलाओं का विकास हुआ । इसके द्वारा निर्मित छायाचित्रों (फोटो), ध्वनिमुद्रितों (रेकार्डों), फिल्मों का उपयोग इतिहास के साधन के रूप में किया जा सकता है ।

छायातच (फोटो) : छायाचित्र आधुनिक भारत के इतिहास के दृश्य स्वरूप के साधन हैं । छायाचित्रण कला (फोटोग्राफी) का आविष्कार होने पर विभिन्न व्यक्तियों, घटनाओं तथा वस्तुओं-वास्तुओं के छायाचित्र खींचे जाने लगे । इन छायाचित्रों द्वारा हमें व्यक्तियों तथा घटित प्रसंगों की दृश्य स्वरूप में हूबहू जानकारी प्राप्त होती है । मध्ययुग में व्यक्ति कैसे दिखाई देते थे अथवा घटनाएँ किस-किस प्रकार घटित हुईं; इनके चित्र उपलब्ध हैं परंतु वे चित्र कितने विश्वसनीय हैं; इस बारे में शंकाएँ उपस्थित की जाती हैं । अतः इन चित्रों की तुलना में छायाचित्रों को अधिक विश्वसनीय माना जाता है । व्यक्तियों के छायाचित्रों द्वारा वे लोग कैसे दीखते थे; उनके परिधान कैसे थे; इस विषय में जानकारी प्राप्त होती है । प्रसंगों अथवा घटनाओं के छायाचित्रों द्वारा वह प्रसंग अथवा घटना आँखों के सामने मूर्तिमान हो जाती है । वास्तु अथवा वस्तु के छायाचित्रों द्वारा उनका स्वरूप ध्यान में आता है ।

ध्वतन म ि (रेकाड : छायाचित्रण (फोटोग्राफी) कला की भाँति ध्वनि मुद्रण (रेकार्डिंग) तकनीक का आविष्कार भी महत्त्वपूर्ण है । ध्वनि मुद्रित अथवा रेकार्ड इतिहास के श्रव्य स्वरूप के साधन हैं । वर्तमान समय में नेताओं अथवा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा दिए गए भाषण, गीत ध्वनि मुद्रित स्वरूप में उपलब्ध हैं । उनका उपयोग इतिहास के

साधन के रूप में किया जा सकता है । जैसे- स्वयं रवींद्रनाथ ठाकुर द्‌वारा गाए हुए 'जन गण मन' राष्ट्रगीत अथवा सुभाषचंद्र बोस के दिए वक्तव्य का उपयोग आधुनिक भारत के इतिहास के अध्ययन में श्रव्य साधन के रूप में किया जा सकता है ।

तफ्ल्म : फिल्म आधुनिक तकनीकी विज्ञान का अनूठा आविष्कार माना जाता है । बीसवीं शताब्दी में फिल्म के तकनीकी विज्ञान में बड़ी मात्रा में उन्नति हुई । १९१३ ई. में दादासाहेब फालके ने भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की नींव रखी । भारतीय स्वतंत्रता युद्‌ध में दांडी यात्रा, नमक आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं के ध्वनि-चित्रफीते (फिल्में) उपलब्ध हैं। इन चित्रफीतों (फिल्मों) के कारण घटित घटनाएँ हम ज्यों-का-त्यों देख सकते हैं ।

प्राचीन और मध्ययुग की तुलना में आधुनिक भारत के इतिहास का अध्ययन करने के लिए विपुल मात्रा में और विविध प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। वर्तमान समय के भौतिक साधन पर्याप्त मात्रा में अच्छी स्थिति में हैं । अभिलेखागार में संरक्षित कर रखे हुए अनगिनत लिखित साधन भी उपलब्ध हैं । लिखित साधनों का उपयोग करते समय वे किन विचारों से प्रेरित हैं; किसी घटना की ओर देखने का साधनकर्ता का क्या दृष्टिकोण रहा; इसकी जाँच कर लेनी चाहिए । इन साधनों का संरक्षण करना आवश्यक है । ऐतिहासिक साधनों का संरक्षण किए जाने पर ही इतिहास की यह समृद्‌ध परंपरा हम भावी पीढ़ियों को सौंप सकेंगे ।

स्वाध्याय

१. तिए गए तक्कल्प से उतर्चा तिक्कल्प चनकर कथन पनः तलोि ।

(१) इतिहास के साधनों में .... साधन आधुनिक तकनीकी विज्ञान पर आधारित हैं ।
(अ) लिखित (ब) मौखिक
(क) भौतिक (ड) दृश्य-श्रव्य

(२) पुणे के .... गांधी स्मारक संग्रहालय में गांधीजी के जीवन विषय में जानकारी प्राप्त होती है ।
(अ) आगा खाँ पैलेस (ब) साबरमती आश्रम
(क) सेल्यूलर जेल (ड) लक्ष्मी विलास पैलेस

(३) .... बीसवीं शताब्दी के आधुनिक तकनीकी विज्ञान का एक अनूठा आविष्कार है।
(अ) पोवाड़ा (ब) छायाचित्र
(क) साक्षात्कार (ड) फिल्म

२. तन्म को कारणसतहति स्प करो ।

(१) अंग्रेजों के शासनकाल में समाचारपत्र सामाजिक पुनर्जागरण के रूप में भी कार्य कर रहे थे ।

(२) आधुनिक भारत के इतिहास का अध्ययन करने हेतु चित्रफीते अर्थात फिल्में अत्यंत विश्वसनीय साधन माने जाते हैं ।

३. तट्पणी तलोि ।

(१) छायाचित्र (फोटो) (२) वस्तु संग्रहालय और इतिहास (३) श्रव्य साधन

४. तन्म संकल्पना तच पू करो ।

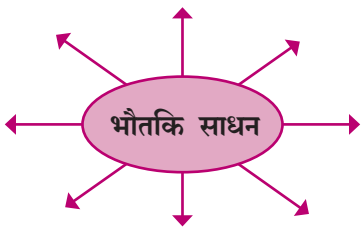

(१) भारतीय स्वतंत्रता युद्‌ध के विभिन्न छायाचित्रों का संग्रह अंतरजाल की सहायता से करो ।

(२) स्वतंत्रता युद्‌ध के विख्यात नेताओं और उनके चरित्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कर उनको पढ़ो ।

99JBIC